ISSN : 2231-0509
वर्ष 20/अंक 6/नवम्बर-दिसम्बर, 2018

शिक्षा विमर्श

शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका

शिक्षा विमर्श

शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका

वर्ष 20/अंक 6/नवम्बर-दिसम्बर, 2018

प्रधान संपादक रोहित धनकर

संपादक प्रमोद

प्रबंधक रीना दास

कला पक्ष रामकिशन अडिग

कम्प्यूटर/प्रसार प्रबंधन ख्यालीराम स्वामी

संपर्क

शिक्षा विमर्श

दिगन्तर, खो नागोरियान रोड,

जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान

फोन : (0141) 2750810

मोबाईल नं. 9214181380 (प्रसार प्रबंधक)

ई मेल: shikshavimarsh@digantar.org

वेबसाइट: www.digantar.org

सदस्यता राशि

	व्यक्तिगत	संस्थागत
एक प्रति	55	80
वार्षिक	300	450
द्वि-वर्षीय	550	850
तीन-वर्षीय	750	1200
आजीवन	3000	4500

(रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए प्रतिवर्ष 100 रुपये अतिरिक्त भिजवाएं)

ऑनलाईन राशि भेजने के लिए www.digantar.org देखें

शिक्षा विमर्श' के लिए सभी भुगतान 'दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर' (Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti, Jaipur) के नाम देय मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा किया जाए।

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं।
दिगन्तर की इन विचारों से सहमति हो यह जरूरी नहीं है।

अनुक्रम

संपादकीय

महत्वाकांक्षाओं के आइने में शिक्षा 3

❑ प्रमोद

साक्षात्कार

बाल-साहित्य में एक दशक का बदलाव 6

❑ प्रभात से करिश्मा बाजपेई की बातचीत

शिक्षा का समाजशास्त्र

शिक्षा के समाजशास्त्रीय सिद्धांत-V

नव-मार्क्सवादी दृष्टिकोण 11

❑ अमन मदान

गणित का शिक्षणशास्त्र

गणित शिक्षण भाग-I

संख्या संबंधी केन्द्रीय विचार 20

❑ रविकांत

लेख

उपलब्धि सर्वेक्षणों का भूगोल और गांवों के स्कूल 24

❑ ऋषभ कुमार मिश्र और रवनीत कौर

शिक्षा का स्वरूप मानवीय चेतना से तय हो न कि बाजार की जरूरतों से 32

❑ आलोक कुमार मिश्रा

अनुभव

पर्यावरण अध्ययन का एक अध्याय

"मंडी से घर तक" पर शिक्षकों व बच्चों के साथ काम की झलक 35

❑ कालू राम शर्मा

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर के लिए सुश्री रीना दास द्वारा भालोटिया प्रिन्टर्स, 1/398 पारीक कॉलेज रोड, जयपुर 302006 से मुद्रित एवं दिगन्तर, खो नागोरियान रोड, जगतपुरा, जयपुर-302017 से प्रकाशित

उपलब्धि सर्वेक्षणों का भूगोल और गांवों के स्कूल

ऋषभ कुमार मिश्र और रवनीत कौर

स्कूली शिक्षा की दशा और दिशा की व्याख्या करने के लिए वृहद् पैमाने के उपलब्धि सर्वेक्षणों का प्रयोग एक लोकप्रिय चलन है। पीसा (प्रोग्राम फॉर इंटरनेशनल स्टूडेंट असेसमेंट) और असर (ऐनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट) इसके उदाहरण हैं। इन रिपोर्टों के प्रकाशित होते ही अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली शिक्षा की सेहत की चर्चाएं जोर पकड़ने लगती हैं। ये चर्चाएं सर्वेक्षण के लिए बनाये गये वैज्ञानिक मापन उपकरणों (उपलब्धि परीक्षण, अभिवृत्ति मापनी, संसाधन उपलब्धता चेकलिस्ट, उपस्थिति पंजिका के अवलोकन आदि) पर प्राप्त अंकों को आधार बनाकर की जाती हैं। इनके द्वारा सफलता और असफलता के कुछ वर्गों का निर्माण कर दिया जाता है। इन वर्गों के सापेक्ष शिक्षा की गुणवत्ता, अवसरों की समानता, शिक्षा के लिए किए गए नीतिगत प्रयासों के बारे में आकलन की कोशिश भी होती है। हाल में ही असर-2018 की रिपोर्ट जारी हुई है। इस रिपोर्ट में 596 जिलों के लगभग साढ़े तीन लाख ग्रामीण परिवारों और सोलह हजार स्कूलों के सर्वेक्षण के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों तक बच्चों की पहुंच, उपलब्धि और विद्यालयों के ढांचागत संरचना के आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। यह रिपोर्ट ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा की चिंताजनक स्थिति को उजागर करती है। इस रिपोर्ट में स्कूलों में नामांकन और बुनियादी सुविधाओं जैसे पैमानों पर सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है लेकिन पढ़ने और गिनने जैसी कुशलताओं में विद्यालयों की खस्ता हालत भी उल्लेखनीय है। उदाहरण के लिए इस रिपोर्ट में बताया गया है कि 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों का स्कूलों में नामांकन लगभग 95 प्रतिशत है (असर, 2018)। 11 से 14 वर्ष तक आयु की विद्यालय न जाने वाली लड़कियों का प्रतिशत 4.1 है (असर, 2018)। इस सार्थक बदलाव के लिए शिक्षा के अधिकार कानून के धरातल पर क्रियान्वयन को उत्तरदायी माना जा रहा है। इस वर्ष सरकारी स्कूलों के नामांकन प्रतिशत और निजी स्कूलों में नामांकन प्रतिशत लगभग बराबर है। ये आंकड़े उत्साहवर्धक हैं लेकिन गांवों में प्राथमिक शिक्षा की वास्तविकता के बारे केवल इनके आधार पर निष्कर्ष निकलना ठीक नहीं होगा। उदाहरण के लिए वर्ष 2018 में लगभग एक चौथाई सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों का नामांकन 60 प्रतिशत और इससे कम है (असर, 2018)। वर्ष 2008 में कक्षा 8 में पढ़ने वाले लगभग 85 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा 2 की किताब पढ़ सकते थे जबकि 2018 में इनकी संख्या घटकर लगभग 73 प्रतिशत हो गई है (असर, 2018)। इसी तरह कक्षा 8 के केवल 44 प्रतिशत बच्चे तीन अंकों में एक अंक से भाग देने की संक्रिया कर सकते हैं (असर, 2018)। इस तरह से असर की रिपोर्ट इस मान्यता को पुनर्बलित करती है कि स्कूल में प्रवेश लेना और बने रहना सीखना सुनिश्चित नहीं कर रहा है। इस निष्कर्ष को सिरे से तो खारिज नहीं कर सकते लेकिन केवल इसके आधार पर शिक्षा और उसकी प्रक्रियाओं के बारे में धारणाएं बना लेना भी ठीक नहीं है। ये सर्वेक्षण मापनीय सच्चाई के बारे में तो बताता है लेकिन इस सच्चाई तक पहुंचने वाले नजरिए का मूल्यांकन भी आवश्यक है। इसी पृष्ठभूमि में यह लेख वृहद् पैमाने के उपलब्धि सर्वेक्षणों (खासकर असर-2018) के औचित्य और व्याख्या को निम्नलिखित सवालों के आइने में देखता है-